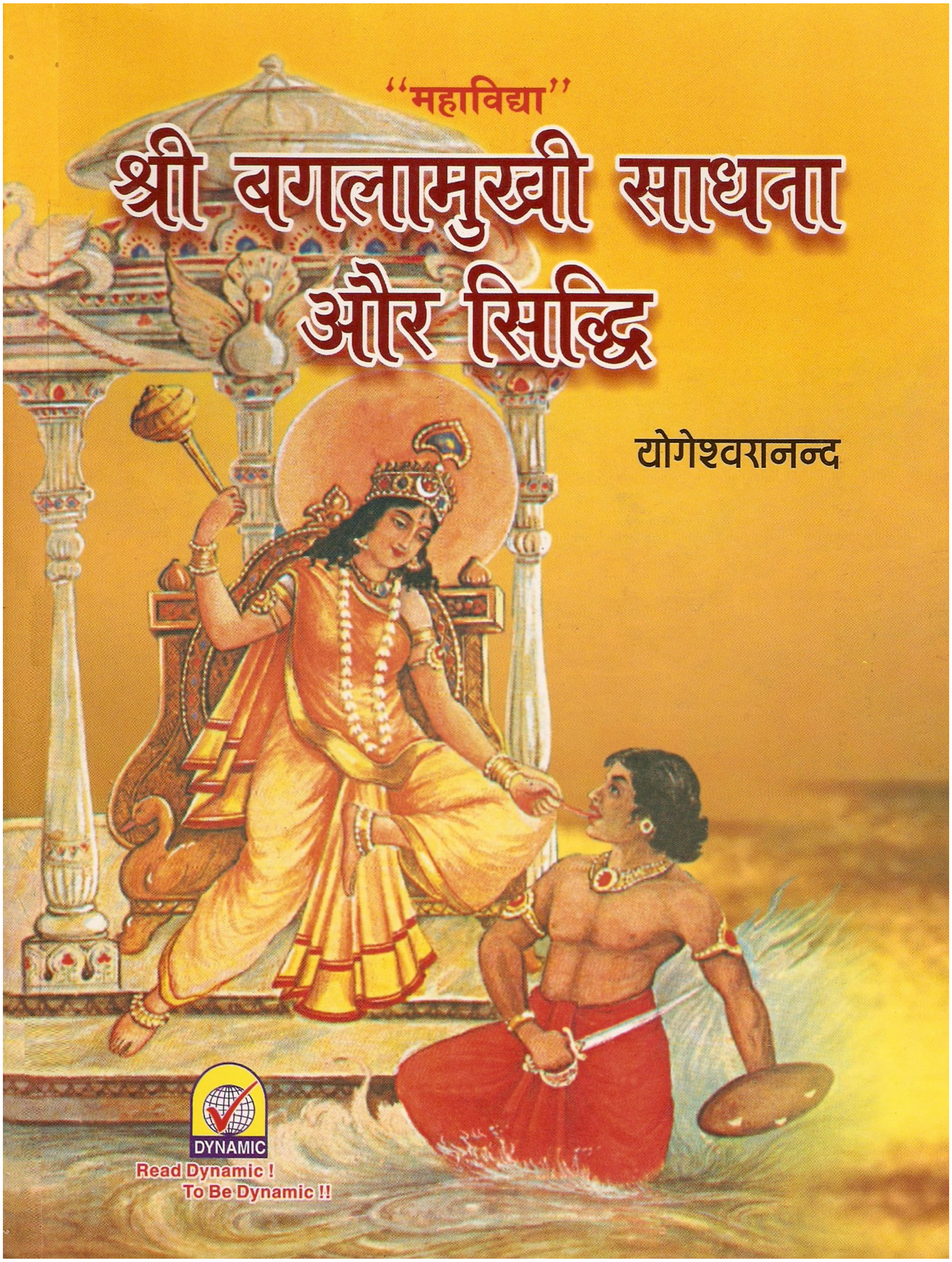
BAGLAMUKHI STOTRA



६ "श्री बगलामुखी स्तोत्रम्"

श्री गणेशाय नमः

प्रस्तुत स्तोत्र प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ **"रुद्रयामल तन्त्र"** से उद्धरित है। इस स्तोत्र का पाठ करने से माँ बगला अत्यन्त प्रसन्न होती हैं और प्राणी के शत्रुओं का स्तम्भन, आपदाओं का नाश और सौभाग्य का ऐसा उदय करती हैं कि शत्रु स्तम्भित होकर उस प्राणी को देखते ही रह जाते हैं।

◆ **विनियोग** ◆

ॐ अस्य श्री बगलामुखी स्तोत्रस्य, नारद ऋषिः, श्री बगलामुखी देवता, त्रिष्टुप छन्दः मम सन्निहितानां विरोधिनां दुष्टानां वाङ्गमुख-पद-बुद्धिनां स्तम्भनार्थे श्री महामाया बगलामुखी वर प्रसाद सिद्धयर्थं जपे (पाठे) विनियोगः।

◆ **अङ्गन्यास** ◆

ॐ ह्ल्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। (अंगूठे का स्पर्श करें)

ॐ बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा। (तर्जनी का स्पर्श करें)

ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्। (मध्यमा का स्पर्श करें)

ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम्। (अनामिका का स्पर्श करें)

ॐ जिह्वां कीलय् कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। (कनिष्ठिका का स्पर्श करें)

ॐ बुद्धि विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा करतल कर पृष्टाभ्यां फट्। (हथेली के अगले व पृष्ठ भागों का स्पर्श, यानि मिलायें)

◆ हृदयादि न्यास ◆

ॐ ह्ल्रीं हृदयाय नमः। (हृदय का स्पर्श करें)

ॐ बगलामुखी शिरसे स्वाहा। (सिर का स्पर्श करें)

ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। (शिखा का स्पर्श करें)

ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। (दोनों हाथों से कवच बनायें)

ॐ जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट्। (दोनों नेत्रों का स्पर्श करें)

ॐ बुद्धिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा, अस्त्राय फट्। (तीन चुटकी व ताली बजायें)

सर्वप्रथम विनियोग करें और हाथ में लिया हुआ जल भूमि पर छोड़ दें। तद्पोरान्त मन्त्र का अङ्गन्यास आदि करें।

◆ ध्यान ◆

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पितांशुकोल्लासिनीं,
हेमाभाङ्गरूचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पक स्रगयुताम्।
हस्तैर्मुद्गर-पाश-वज्र-रसनां संबिभ्रतीं भूषणैः,
व्याप्ताङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनी चिन्तयेत्॥

◆ जप मन्त्र ◆

ॐ ह्ल्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय।
जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा॥

॥ स्तोत्र ॥

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्नवेद्यां,
सिहांसनो परिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीं,
देवीं भजामि धृत-मुद्गर-वैरिजिह्वाम ॥१॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं,
वामेन शत्रुन् परिपीड़यन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन,
पीताम्बराढयां द्विभुजां नमामि। ॥२॥

भावार्थ- अमृत सागर के मध्य, मणिमण्डप की रत्नवेदी पर एक सिंहासन पर पीतवर्णा देवी विराजमान हैं। उनके वस्त्राभूषण, माला आदि सब कुछ पीत रंग के हैं। बायें हाथ में शत्रु की जिह्वा पकड़कर दाहिने हाथ में मुद्गर लेकर शत्रु पर प्रहार कर रही हैं। ऐसी माँ पीताम्बरा को मैं प्रणाम करता हूँ।

चलत्कनक-कुण्डलोल्लसित-चारू गण्डस्थलां,
लसतकनक-चम्पक-द्युति-मदिन्दु-बिम्बाननाम्।

गदाहत-विपक्षकां कलित-लोल-जिह्वां चलां,

स्मरामि बगलामुखीं विमुख-वाङ-मनः स्तम्भिनीम् ॥३॥

भावार्थ– चंचल स्वर्ण कुण्डलों से सुसज्जित कपोलों वाली, कनक व चम्पा के पुष्प जैसे शरीर की कान्तिपूर्ण चन्द्रमुखी, गदा-प्रहार से शत्रुओं की हन्ता, सुन्दर चंचल जिह्वा वाली, विमुखों की वाणी व मन का स्तम्भन करने वाली माँ बगलामुखी का मैं स्मरण करता हूँ।

पीयूषोदधि-मध्य-चारु-विलसद्-रत्नोज्ज्वले मण्डपे,

तत्सिंहासन-मूल-पतित-रिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम्।

स्वर्णाभां कर-पीड़ितारि-रसनां भ्राम्यद गदां विभ्रमां,

यस्त्वां ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः ॥४॥

भावार्थ– जो साधक अमृत-समुद्र के मध्य में रत्नोज्ज्वलित मण्डप, रत्नजड़ित सिंहासन पर आसीन स्वर्ण आभा वाली एक हाथ से शत्रु जिह्वा और दूसरे में घूमती हुई गदा (मुद्गर) धारण किये हुए, प्रेतासन पर आसीन, रिपुओं के शीश झुकाने वाली, आपका ध्यान करता है, उसकी सभी आपदाओं का तुरन्त विलय हो जाता है, अर्थात् नाश हो जाता है।

देवी! त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीत पुष्पाञ्जलिं,

मुद्रा वामकरे निधाय च मनन मन्त्रों मनोज्ञाक्षरम्।

पीताध्यानपरोऽथ कुम्भक वशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवं,

तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात् ॥५॥

भावार्थ– हे देवी! जो साधक आपके चरण-कमलों का पीत पुष्पों की अञ्जलि से अर्चन करता है, मुद्रा बनाकर आपके ध्यान में तत्पर होकर कुम्भक मनोहर अक्षर वाले भूमि बीज **'लं'** का स्मरण करता है, उसके अमित्रों अर्थात् शत्रुओं की वाणी और हृदय में तत्क्षण जड़ता आ जाती है, अर्थात् स्तम्भन हो जाता है।

वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति,

क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।

गर्वी खर्वति सर्वविच्च जड़ति त्वधन्त्रणा यन्त्रितः,

श्री नित्ये! बगलामुखी! प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥६॥

भावार्थ– हे कल्याणि! आपके मन्त्र के द्वारा यन्त्रित किया गया वादी गूंगा, छत्रपति रंक, अग्नि शीतल, क्रोधी शान्त, दुर्जन सुजन, धावक लंगड़ा, गर्वयुक्त छोटा और सर्वज्ञ जड़ हो जाता है। अतएव, हे लक्ष्मी स्वरुपा नित्ये! माँ बगला! कल्याणी! मैं आपको प्रतिदिन नमन् करता हूँ।

मन्त्र स्तावदलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते।

यन्त्र वादि नियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रं च ते।

मातः! श्री बगलेति नाम ललितं यस्याऽस्ति जन्तोर्मुखे,

त्वन्नाम स्मरेण संसदि मुखस्तम्भों भवेद् वादिनाम ॥७॥

भावार्थ– शत्रुओं के दल के दमन के लिए आपका मन्त्र ही पर्याप्त है और वैसा ही पवित्र स्तोत्र भी। वक्ताओं के नियन्त्रण हेतु आपका त्रिलोक प्रसिद्ध विजयशाली यन्त्र भी विलक्षण है। माँ! **"श्री बगला"**-आपका यह

ललित नाम जिस भी साधक के मुख की शोभा बढ़ाता है, वह धन्य है, क्योंकि आपके नाम के स्मरण मात्र से ही वक्ताओं के मुख स्तम्भित हो जाते हैं।

दुष्ट-स्तम्भन-मुग्र-विघ्न-शमनं दारिद्रय-विद्रावणं,

भूभृत्संनमनं च यन्मृगदृशां चेतः समाकर्षणम्।

सौभाग्यैक-निकेतनं समदृशां कारुण्यपूर्णेक्षणे,

मृत्योमार्रणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥८॥

भावार्थ– दुष्टों का स्तम्भन करने वाला, उग्र विघ्नों का शमन कारक, दरिद्रता का नाश करने वाला, भूपतियों का दमन कारक, मृग जैसी चंचल चितवनों वाली के चित्त का भी आकर्षण करने वाला, सौभाग्य का एक मात्र निवास, करुणा पूर्ण नेत्रों वाला, मृत्यु का भी मारण करने वाला आपका सुन्दर शरीर है। माँ! मुझे दर्शन दो।

मातर्भञ्जय मद-विपक्ष-वदनं जिह्वां च संकीलय,

ब्राह्मीं यन्त्रेय दैत्य-देव-घिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय।

शत्रुंश्चूर्णय देवि! तीक्ष्ण-गदया गौराङ्गि पीताम्बरे!

विघ्नोघं बगले! हर प्रणमतां कारुण्य पूर्णेक्षणे॥९॥

भावार्थ– हे गौराङ्गी! पीताम्बरे! हे देवी! मेरे शत्रुओं की वाणी को बन्द कर दो। उनकी जिह्वा को कील दो। ब्राह्मी मुद्रा धारण कर दैत्य और देवों की उग्र गति को स्तम्भित कर दो। माँ! अपनी तीक्ष्ण गदा से मेरे शत्रुओं को चूर्ण कर दो। अपनी करुणापूर्ण दृष्टि से साधकों के विघ्न समूह को दूर कर दो।

मातर्भैरवि! भद्र-कालि! विजये! वाराहि विश्वाश्रये!,

श्री विद्ये! समये! महेशि! बगले! कामेशि! वामे रमे!,

मातङ्गि! त्रिपुरे! परात्पर-तरे! स्वर्गापवर्ग-प्रदे!,

दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि! त्राहिमाम्॥१०॥

भावार्थ– हे माँ! भैरवी! भद्रकाली! विजया! वाराही! भुवनेश्वरि! श्री विद्या! षोडशी! महेशी! बगला! रमा अर्थात् कमला! मातङ्गी! सब आप ही हैं। माँ–स्वर्ग और मोक्ष प्रदायिनी भी आप ही हैं। हे माँ! हे विश्वेश्वरी! करुणा करके मेरी रक्षा करो। मैं आपका दास हूँ और आपकी शरण में हूँ।

त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननि विघ्नोघ विध्वंसिनी,

योषाकर्षण कारिणी त्रिजगतामानन्द-सम्वर्धिनी।

दुष्टोच्चाटन कारिणी पशुमनः सम्मोह- संदायिनी,

जिह्वा कीलन भैरवि विजयते ब्रह्मास्त्र विद्या परा ॥११॥

भावार्थ– आप! परम विद्या हैं, त्रिलोक जननि हैं, विघ्नों का नाश करने वाली हैं, स्त्रियों को आकर्षित करने वाली हैं, तीनों जगतों का आनन्द संवर्धन करने वाली हैं, दुष्टों का उच्चाटन करने वाली हैं, पशुमन को सम्मोहन देने वाली हैं, दुष्टों की जिह्वा कीलन में भैरवी हैं और विजय प्रदान करने में परा ब्रह्मास्त्र विद्या हैं।

पीतवस्त्र वसनाभरि-देह-प्रेत-जासन निवेशित देहाम्,

फुल्लपुष्प-रविलोचन-रम्यां दैत्यजाल दहनोज्जवल-भूषाम्।

पर्यंकोपरि-लसदद्विभुजां कम्बु-हेमनत-कुण्डल-लोलाम्।

वैरिनिर्दल-कारण-रोषां चिन्तयामि बगलां हृदयाब्जे ॥१२॥

भावार्थ– पीतवस्त्रा, शत्रु के शव पर आसन लगाये, पुष्प की तरह कोमलांगी, सूर्य की तरह नेत्रों वाली, दैत्यों के लिए उज्जवल वस्त्र धारण किये, पलंग पर शोभायमान, दो हाथों वाली, वलयाकार स्वर्ण कुण्डल से शोभित, बैरियों के दलन हेतु अत्यन्त रोषयुक्त माँ बगला का मैं हृदय कमल में ध्यान करता हूँ।

यत् कृतं जप संध्यानं चिन्तनं परमेश्वरि।
शत्रुणां स्तम्भनार्थाय तद् गृहाण नमोऽस्तुते ॥१३॥

भावार्थ– हे पराम्बा! हे परमेश्वरी! माँ बगले! दुष्टों के स्तम्भनार्थ, आपके विषय में मैंने जपादि पूर्वक जो कहा है, उसे आप स्वीकार करें। माँ पीताम्बरा! आपको मेरा बारम्बार नमस्कार है।

卐 卐 卐

About The Author



Name : **Shri Yogeshwaranand**
Contact : **+919917325788 (INDIA)**
Web : http://anusthanokarehasya.com
Email : anusthano_ka_rehasya@yahoo.com